ओ३म्

# नित्यकर्म विधि

लेखक


**वेदरत्न प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार**

भू०पू० उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उ०प्र०)

To Gopalji Banaraswale
C/o Divya yoga mandir
Kankhal Haridwar

ओ३म्

असतो मा सद्गमय-तमसो मा ज्योतिर्गमय-मृत्योर्मामृतं गमय।

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

"श्रद्धा साहित्य प्रकाशन का 64वाँ पुष्प"

# नित्यकर्म विधि


*लेखक :*

**वेदरत्न प्रो॰ रामप्रसाद वेदालंकार**

भू॰पू॰ उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उ॰प्र॰

*पता :*

512, वेदसदन, आर्यनगर, ज्वालापुर, जिला-हरिद्वार

उत्तर प्रदेश-249407



*प्रकाशक :*

श्रीमती सरोज आर्या,

*अध्यक्षा* "श्रद्धा साहित्य प्रकाशन", 512, वेदसदन, आर्यनगर,

ज्वालापुर, जिला हरिद्वार, उत्तर प्रदेश

प्र॰ सं॰ 4000, दयानन्द 173 वि॰ सम्वत् 2053 मार्च 1997

द्वितीय संस्करण 4000 प्रतियां मार्च 1999

तृतीय संस्करण 4000 प्रतियां अगस्त 2000

मूल्य — १० रुपये

# स्वर्गीया श्रीमती लाली देवी जी

## (जिन की पुण्य स्मृति में यह पुस्तक प्रकाशित हुई)

श्रीमती लाली देवी जी का जन्म 1919 में अविभाजित भारत के जिला मर्दान, फ्रन्टियर में हुआ। वे अपनी माता राम पत्तरी देवी तथा पिता श्री गंगा बिशन जी की सबसे ज्येष्ठ सन्तान थीं। माता-पिता से इन्हें धार्मिक संस्कारों के साथ-साथ अत्यन्त प्यार व लाड़ मिला। केवल 15 वर्ष की आयु में इनका विवाह श्री बाल मुकुन्द जी से हुआ और प्रभु ने इन्हें पाँच पुत्ररत्न प्रदान किए जिनके नाम श्री यशपाल, श्री सतपाल, श्री अशोक, श्री नरेश एवं श्री राकेश हैं। इन्हें जीवन में परिवार जनों से प्यार एवं सम्मान सेवा इत्यादि सभी प्राप्त हुआ।

श्रीमती लाली देवी बड़ी ही धार्मिक प्रवृत्ति की सरल, सौम्य और शान्त स्वभाव की थी। उनके चेहरे पर उनके नाम स्वरूप लालिमा और देवत्व स्पष्ट दिखाई देता था। अधिक पढ़ी-लिखी न होते हुए भी उन्होंने जीवन में स्वाध्याय कभी नहीं छोड़ा। सत्संग के प्रति भी उनकी विशेष रुचि थी। समयनुसार सदा ही वे संध्या, भजन और यथा संभव हवन करती थीं। इन संस्कारों का प्रभाव उनके परिवार जनों पर भी पड़ा। जीवन में उन्होंने बहुत उतार चढ़ाव देखे परन्तु धैर्य और प्रभु विश्वास उनमें सदा बना रहा। छल-कपट तो उनसे कोसों दूर था। उनके मुख से सदा आर्शीवचन ही निकलते थे। वे कभी भी खाली नहीं बैठती थीं। सात्विकता के साथ-साथ वे सूझ-बूझ की भी धनी थीं। वह एक सुगृहिणी महिला होने के साथ-साथ बहुत अच्छी सलाहकार भी थीं। यदि कोई दीन दुखिया हो तो वे बिना किसी दिखावे के उसकी सहायता करतीं। यद्यपि उनका समूचा परिवार उन्हें सर आंखों पर बिठाता था परन्तु उनमें कभी भी अभिमान नहीं आया। सदा नम्रतापूर्वक वे ये कहती मैं तो बिल्कुल साधारण हूँ, यह प्रभु कृपा है कि मुझे इतना आदर सम्मान मिल रहा है। यद्यपि वे अस्वस्थ भी रहतीं परन्तु उनका चेहरा सदा खिला हुआ रहता और एक गुलाब के समान उनकी सुगन्ध चहुँ और बिखरती रहती। उनका हृदय इतना विशाल था कि हर कोई उसमें अपना स्थान पा लेता था। सुनने में ये सब बातें छोटी-छोटी प्रतीत होती हैं परन्तु जीवन में विरलों में ही ये सब गुण विद्यमान होते हैं। कहते हैं कि यदि वेद शास्त्र का ज्ञान तराजू के एक पलड़े पर रखा जाए और सरलता, निश्छलता, सादगी, सौम्यता एवं सत्य दूसरे पलड़े पर तो दूसरा पलड़ा भारी होगा, क्योंकि वेद शास्त्र ज्ञान आदि का लक्ष्य तो यही निश्छलता, पवित्रता और सौम्यता प्राप्त करना ही है।

शारीरिक अवस्थता के कारण वे 8 मई 2000 को इस संसार से सदा के लिए विदा ले गई। भले ही आज वे हमारे बीच विद्यमान नहीं हैं परन्तु उनकी दिव्य प्रेरणाएं और अविस्मरणीय व्यक्तित्व आज भी उनके परिवार को एक ज्योति एवं दिशा दिए हुए हैं। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं परिवार जनों को उनके दिखाए हुए रास्ते पर चलने की प्रेरणा दे।

विनीत - सरोज आर्या

## प्रातःकालीन कर्त्तव्य

जब स्त्री–पुरुष १० बजे शयन और रात्री की पिछली पहर वा ४ बजे उठ के प्रथम हृदय में परमेश्वर का चिन्तन करके व्यावहारिक तथा पारमार्थिक कर्त्तव्य कर्म की सिद्धि के लिये निम्नलिखित मन्त्रों से ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना सदा किया करें, जिससे कि परमेश्वर की अपार कृपा और सहायता से महाकठिन कार्य भी सुगमता से सिद्ध हो सके।

## प्रभात–वन्दन

(प्रातःकालीन प्रार्थना मन्त्र)

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुतरुद्रं हुवेम ।१ ।

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ।२ ।

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम ।३ ।

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ।४ ।

भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह ।५ ।

ऋ० ७.४१.१-५ ।।

## ब्रह्मयज्ञ-वैदिक सन्ध्या पद्धति

**सन्ध्या की तैयारी**-सन्ध्या का आरम्भ करते समय तैयारी के रूप में पहले बाह्य जलादि से शरीर की शुद्धि कर फिर आसन पर विराजमान होकर राग-द्वेष असत्यादि के त्याग से भीतर की शुद्धि करनी चाहिए। फिर न्यून से न्यून तीन प्राणायाम करें और मन में ओम् का जप करता जाए, ताकि ऐसा करने पर मन की चंचलता दूर होकर एकाग्रता आए तथा परमेश्वर के मनन-चिन्तन निदिध्यासन आदि में सहज प्रवत्ति हो।

**शिखाबन्धन**-इसके अनन्तर निम्नलिखित गायत्री मन्त्र से शिखा को बाँधे, इसलिये कि इधर-उधर केश बिखरे न रहें। यदि केश आदि न बिखरे हों तो न करे। इस प्रकार जहाँ बाह्य रूप से शिखा को बान्धे वहाँ भीतरी रूप से बिखरी हुई वृत्तियों को बान्ध कर अपने चित्त को एकाग्र करने का हार्दिक संकल्प करे।

### गायत्री-मन्त्र

**ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्** ।। यजु० ३६.३ ।। ऋ० ३.६२.१० ।।

### आचमन-मन्त्र

**ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः**।। यजु० ३६.१२ ।।

इस प्रकार इस मन्त्र से परमेश्वर की प्रार्थना करके तीन आचमन करे, यदि जल न हो तो न करे। आचमन आलस्य और कण्ठस्थ कफके निवारण के लिये है।

बायीं हथेली में जल लेकर अपने दाहिने हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों से जल स्पर्श करते हुए प्रथम दक्षिण पश्चात् वाम पार्श्व निम्नलिखित मन्त्रों से स्पर्श करे–

**ओं वाक् वाक्।** इस मन्त्र से मुख का दायाँ और बायाँ भाग।

**ओं प्राणः प्राणः।** इस से नासिका का दायाँ और बायाँ छिद्र।

**ओं चक्षुः चक्षुः।** इस से दायाँ और बायाँ नेत्र।

**ओं श्रोत्रं श्रोत्रम्।** इससे दायाँ और बायाँ कान।

**ओं नाभिः।** इससे नाभि।

**ओं हृदयम्।** इससे हृदय।

**ओं कण्ठः।** इससे कण्ठ।

**ओं शिरः।** इससे शिर अर्थात् मस्तिष्क।

**ओं बाहुभ्यां यशोबलम्।** इससे दोनो भुजाओं के मूल स्कन्द।

**ओं करतलकरपृष्ठे।** इससे दोनो हाथों के ऊपर तले स्पर्श करे।

इस प्रकार से ईश्वर की प्रार्थना पूर्वक इन्द्रियों का स्पर्श करे। इस का अभिप्राय है कि ईश्वर की प्रार्थना से सब इन्द्रियाँ बलवान् रहें।

## मार्जन-मन्त्र

बाँये हाथ की हथेली में जल लेकर दायें हाथ की मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठ से यद्वा कुशा से शिर, नेत्र आदि अंगों पर जल छिड़कें।

**ओं भूः पुनातु शिरसि** । इस मन्त्र से शिर पर।

**ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः** । इस मन्त्र से दोनों नेत्रों पर।

**ओं स्वः पुनातु कण्ठे** । इस मन्त्र से कण्ठ पर।

**ओं महः पुनातु हृदये** । इस मन्त्र से हृदय पर।

**ओं जनः पुनातु नाभ्याम्** । इस मन्त्र से नाभि पर।

**ओं तपः पुनातु पादयोः** । इस मन्त्र से दोनों पैरों पर।

**ओं सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि** । इस मन्त्र से पुनः शिर पर।

**ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र** । इस मन्त्र से सब अंगों पर छींटा देवे।

इस प्रकार उपर्युक्त मन्त्रों द्वारा जल से मार्जन करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करे कि "वह मन्त्रों में निर्दिष्ट हमारे अंगों को पवित्र करे।"

## प्राणायाम-मन्त्र

निम्न मन्त्रों के अर्थों की मन में भावना करते हुए जपपूर्वक न्यून से न्यून तीन प्राणायाम् करे।

**ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम्।** (तैति॰ प्रपा १०। अनु॰ २७।।)

इस प्रकार प्राणायाम करके अर्थात् भीतर से वायु को बल से नासिका द्वारा बाहर फैंक के, यथाशक्ति बाहर ही रोक के, पुनः धीरे-धीरे भीतर ले के, पुनः बल से बाहर फैंक के रोकने से मन और आत्मा को स्थिर करके आत्मा के बीच में जो अन्तर्यामी रूप से ज्ञान और आनन्द स्वरूप

व्यापक परमेश्वर है, उसमें अपने आप को मग्न करके अत्यन्त आनन्दित होना चाहिए। जैसे गोताखोर जल में डुबकी मार के शुद्ध होके बाहर आता है, वेसे सब जीव लोग अपनी आत्माओं को शुद्ध ज्ञान और आनन्दस्वरूप व्यापक परमेश्वर में मग्न करके नित्य शुद्ध करें।

## अघमर्षण-मन्त्र

तत्पश्चात् सृष्टिकर्ता परमेश्वर और सृष्टिक्रम का विचार नीचे लिखे मन्त्रों से करे और जगदीश्वर को सर्वव्यापक न्यायकारी सर्वत्र सर्वदा सब जीवों के कर्मों के द्रष्टा को निश्चित मान के पाप की ओर अपने आत्मा और मन को कभी न जाने देवे, किन्तु सदा धर्मयुक्त कर्मों में वर्तमान रखें।

**ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।**
**ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ।। १ ।।**
**समुद्रादर्णावादधि संवत्सरो अजायत।**
**अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।। २ ।।**
**सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्।**
**दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः । ३ ।** ऋ १०.१९०.१-३ ।।

वेद से ले के पृथिवी पर्यन्त जो यह जगत् है, सो सब ईश्वर के नित्य सामर्थ्य से ही उत्पन्न हुआ है और ईश्वर सबको उत्पन्न करके सब में व्यापक हो के अन्तर्यामी रूप से सब के पाप पुण्यों को देखता हुआ पक्षपात छोड़ के सत्य न्याय से सब को यथावत् फल दे रहा है। ऐसा निश्चित जान के ईश्वर से भय करके, सब मनुष्यों को उचित है कि मन, वचन और कर्म से पाप कर्मों को कभी न करें, इसी का नाम अघमर्षण है। अर्थात् ईश्वर सब के अन्तःकरण के कर्मों को देख रहा है, इससे पाप कर्मों का आचरण मनुष्य लोग सर्वथा छोड़ देवें।

## आचमन-मन्त्र

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः।। यजु० ३६।१२ ।।

इस मंत्र से पुनः तीन आचमन करे।

## मनसा परिक्रमा मन्त्र

सब दिशाओं में व्यापक परमेश्वर की सन्ध्या में अग्नि, इन्द्र, वरुण, सोम आदि नामों से स्तुति प्रार्थना करे।

ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।। १ ।।

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।। २ ।।

प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।। ३ ।।

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो
रक्षिता–शनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो
रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान्
द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।। ४ ।।

ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता
वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपितिभ्यो नमो
रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान्
द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।। ५ ।।

ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता
वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो
नम इषुभ्यो नम एभ्यों अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं
वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।। ६ ।।

अथर्व॰ कां॰ ३। सू॰ २७। मं॰ १-६ ।।

इन मन्त्रों को पढ़ते जाना और अपने मन से चारों और बाहर भीतर परमात्मा को पूर्ण जानकर निर्भय निश्शंक उत्साही आनन्दित पुरुषार्थी रहना। (संस्कार विधि)

## उपस्थान मन्त्र

मनसा परिक्रमा के मन्त्रों द्वारा अपने चारों ओर, ऊपर नीचे सर्वत्र परमेश्वर को व्यापक समझ कर निम्नलिखित मन्त्रों से उस परमात्मा का उपस्थान अर्थात् परमेश्वर के निकट मैं और मेरे अतिनिकट परमात्मा है, ऐसी बुद्धि करके करे।

ओ३म् उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ।१। यजु॰ ३५.१४ ॥

उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ।। २ ।। यजु॰ ३३.३१ ॥

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षँ सूर्य आत्मा
जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ।। ३ ।। यजु॰ ७.४२ ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।। ४ ।।

यजु॰ ३६.२४ ॥

इस प्रकार प्रेम में अत्यन्त मग्न होके अपने आत्मा और मन को परमेश्वर में जोड़ के इन मंत्रों से स्तुति और प्रार्थना सदा करते रहें एवं इन मन्त्रों में परमात्मा के सन्निकट हुआ-हुआ, उस में अत्यन्त मग्न हुआ-हुआ, उसके प्रेम में विभोर हुआ-हुआ उस से जो शान्ति और आनन्द प्राप्त करे, उस से शान्त और तृप्त होकर व्युत्थान काल में भी यह शान्ति और आनन्द बना रहे, ऐसी सद्बुद्धि के लिए प्रार्थना करे।

## गायत्री मन्त्र

गायत्री मन्त्र के अर्थ विचार पूर्वक परमात्मा की स्तुति प्रार्थना और उपासना करे।

**ओ३म् भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्** ।। यजु० ३६.३।। ऋ० ३.६२.१०।।

## समर्पण

इस प्रकार सब मन्त्रों के अर्थों से परमेश्वर की सम्यक् उपासना करके निम्नलिखित वाक्य से उपासक अपने अहँकार की निवृत्ति के लिए किये गये सन्ध्योपासना रूप कर्म का परमेश्वर के आगे समर्पण करे।

**हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयानेन जपोपासनादि-कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ।।**

## नमस्कार मन्त्र

अन्त में उपासक निम्नलिखित मन्त्र से उपास्यदेव परमेश्वर को नमस्कार करे।

**ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च**

**नमः शंकराय च मयस्काराय च**

**नमः शिवाय च शिवतराय च**

**ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।** यजु० १६.४१ ।।

# बृहद्-यज्ञपद्धति

## देवयज्ञ-अग्निहोत्र

### आचमन मन्त्र

**ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।।१ ।।** इस से एक,

**ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ।।२ ।।** इस से दूसरा,

**ओम् सत्यं यशः श्रीर्मयिः श्रीः श्रयतां स्वाहा ।।३ ।।**

इस से तीसरा आचमन करें। तैत्ति॰ प्र॰१० । अनु॰ ३२.३५ ।।

## अंगस्पर्श मन्त्र

उपर्युक्त तीन आचमन करने के पश्चात् बायीं हथेली में थोड़ा सा जल लेकर दायें हाथ की अनामिका और मध्यमा अंगुलियों से जल का स्पर्श करके निम्नलिखित मन्त्रों से अंगस्पर्श करें-

**ओं वाङ्म आस्येऽस्तु ।।** इस मन्त्र से मुख,

**ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ।।** इस मन्त्र से नासिका के छिद्र,

**ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ।।** इस मन्त्र से दोनों आँखें,

**ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।।** इस मन्त्र से दोनों कान,

**ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ।।** इस मन्त्र से दोनों बाहु,

**ओम् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ।।** इस मन्त्र से दोनों जँघा और

**ओम् अरिष्टानि मे ऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु । ३ ।**

इस मन्त्र से दायें हाथ से जल स्पर्श करके शरीर के सब अंगों पर मार्जन करें। पारस्कर गृह्य॰ कां॰ 1 कण्डिका 3 सू॰ 25 ।।

इस के अनन्तर निम्नलिखित आठ मन्त्रों से स्तुति प्रार्थना और उपासना स्थिरचित होकर परमात्मा में ध्यान लगाकर करें-

## अथ ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना-मंत्र

**ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।**
**यद् भद्रं तन्न आसुव ।। १ ।।** यजु॰ ३०।३ ।।

अर्थः- हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता समग्र ऐश्श्वर्ययुक्त शुद्धस्वरूप सब दुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए, जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं वह सब हम को प्राप्त कराइये ।।1 ।।

**हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।**
**स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।२ ।।**

यजु॰ १३।४ ।।

अर्थः- जो स्वप्रकाशरूप और जिसने प्रकाश करने हारे सूर्य, चन्द्रमा आदि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किए हैं, जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतनस्वरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, वह इस भूमि और सूर्य आदि को धारण कर रहा है, हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें ।।2 ।।

**य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।। ३ ।।** यजु॰ २५।१३ ।।

अर्थः- जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर और समाज के बल का देने हारा, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिस का प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिस का आश्रय ही मोक्षसुखदायक है, जिस का न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें ।।3 ।।

**यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।4 ।।** यजु॰ 23।3 ।।

अर्थः- जो प्राण वाले और अप्राणिरूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है, जो इस मनुष्य आदि और गौ आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है, हम उस सुखस्वरूप सकलैश्वर्य के देने हारे परमात्मा की उपासना अर्थात् अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञा पालन में समर्पित करके विशेष भक्ति करें ।।4 ।।

**येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम् ।।5 ।।** यजु॰ 32।6 ।।

अर्थः- जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाव वाले सूर्य आदि और भूमि का धारण, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण और जिस ईश्वर ने दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश में सब लोक-लोकान्तरों

को विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस सुखदायक कामना करने योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें ।।5 ।।

**प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।6 ।।** ऋ० 10।121।10।।

अर्थः- हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मा ! आप से भिन्न दूसरा कोई उन इन सब उत्पन्न हुए जड़ चेतनादिकों को नहीं तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होके हम लोग आप का आश्रय लेवें और वाञ्छा करें, वह-वह कामना हमारी सिद्ध होवे, जिस से हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें ।।6 ।।

**स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्रदेवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।।7 ।।** यजु० 32।10।।

हे मनुष्यों ! वह परमात्मा अपने लोगों को भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत् का उत्पादक, वह सब कामों का पूर्ण करने हारा, सम्पूर्ण लोक मात्र और नाम, स्थान, जन्मों को जानता है, और जिस सांसारिक सुख-दुःख से रहित नित्यानन्दयुक्त मोक्षस्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान् लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है, अपने लोग मिल के सदा उस की भक्ति किया करें ।।7 ।।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ।। 8 ।। यजु॰ 40।16।।

अर्थः- हे स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करने हारे, सकल सुखदाता परमेश्वर! आप जिस से सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान वा राज्य आदि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइये, और हम से कुटिलतायुक्त पापरूप कर्म को दूर कीजिये, इस कारण हम लोग आप की बहुत प्रकार की स्तुतिरूप नम्रतापूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें ।।8 ।।

## अथ स्वस्तिवाचनम्

ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम् ।। 1 ।। ऋ॰ 1।1।1।।

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये ।। 2 ।। ऋ॰ 1।1।9।।

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः। स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ।। 3 ।। ऋ॰ 5।51।11।।

स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ।। 4 ।। ऋ॰ 5।51।12।।

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये। देवा। अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ।। 5 ।। ऋ 5 । 51 । 13 ।।

स्वस्ति मित्र वरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति। स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि।। 6 ।। ऋ 5 । 51 । 14 ।।

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ।। 7 ।। ऋ 5 । 51 । 15 ।।

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः। ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।। 8 ।। ऋ 7 । 35 । 15 ।।

येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रि-बर्हाः। उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदा स्वस्तये ।। 9 ।। ऋ 10 । 63 । 3 ।।

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः। ज्योतिरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ।। 10 ।। ऋ 10 । 63 । 4 ।।

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपह्वृिता दधिरे दिवि क्षयम्। ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये ।। 11 ।। ऋ 10 । 63 । 5 ।।

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन। को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ।। 12 ।। ऋ 10। 63। 6।।

येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः। त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ।। 13 ।। ऋ 10। 63। 7।।

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः। ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ।। 14 ।। ऋ 10। 63। 8 ।।

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्। अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये ।। 15 ।। ऋ 10। 63। 9 ।।

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्। दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ।। 16 ।। ऋ 10। 63। 10।।

विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः। सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृणवतो देवा अवसे स्वस्तये।। 17 ।। ऋ 10। 63। 11।।

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः। आरे देवा द्वेषो

अस्मद्युयोतनोरुण: शर्म यच्छता स्वस्तये ।। 18 ।। ऋ० 10 । 63 । 12 ।।

अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि। यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ।। 19 ।। ऋ० 10 । 63 । 13 ।।

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हि ते धने। प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ।। 20 ।। ऋ० 10 । 63 । 14 ।।

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति। स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ।। 21 ।। ऋ० 10 । 63 । 15 ।।

स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति। सा नो अमा सो अरणे निपातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ।। 22 ।। ऋ० 10 । 63 । 15 ।।

इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशँसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ।। 23 ।। ऋ० 1 । 1 ।।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ।। 24 ।। यजु० 25 । 14 ।।

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवाना ँ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।। 25 ।। यजु॰ 25 । 15 ।।

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।। 26 ।। यजु॰ 25 । 18 ।।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।। 27 ।। यजु॰ 25 । 19 ।।

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।। 28 ।। यजु॰ 25 । 21 ।।

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि ।। 29 ।। साम॰ पूर्वा॰ 1 । 1 ।।

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने ।। 30 ।। साम॰ पूर्वा॰ 1 । 2 ।।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः। वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ।। 31 ।।

अथर्व॰ 1 । 1 । 1 ।

।। इति स्वस्तिवाचनम् ।।

## अथ शान्तिकरणम्

संसार के सब पदार्थ वा सब दैवी शक्तियाँ हमारे लिये सुखदायक हों ऐसी निम्न मन्त्रों द्वारा प्रभु से सब प्रार्थना करें–

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ।।1 ।। ऋ॰7।35।1 ।।

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ।।2 ।। ऋ॰7।35।2।।

शं नो धाता शमुधर्त्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ।।3 ।। ऋ॰7।35।3 ।।

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रा–वरुणावश्विना शम्। शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः ।।4 ।। ऋ॰7।35।4।।

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु। शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ।।5 ।। ऋ॰7।35।5।।

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः। शं नो रुद्रो रुदेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह श्रृणोतु ।।6 ।। ऋ॰7।35।6।।

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः। शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिंः ।।7 ।। ऋ॰7।35।7।।

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु। शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ।।8 ।। ऋ॰7।35।8।।

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ।।9 ।। ऋ॰7।35।9।।

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ।।10 ।। ऋ॰7।35।10।।

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्या पार्थिवाः शं नो अप्याः ।।11 ।। ऋ॰7।35।12।।

शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः। शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ।।13 ।। ऋ॰7।35।13।।

इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ।।14 ।। यजु॰36।8 ।।

शं नो वातः पवतां शं नस्तपतू सूर्य्यः। शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु ।।15 ।। यजु॰ 36।10।।

अहानि शं भवन्तु नः शँ रात्रीः प्रतिधीयताम्। शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः ।।16 ।। यजु॰ 36।11।।

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः ।।17 ।। यजु॰ 36।12।।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।18 ।। यजु॰ 36।17।।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।।19 ।। यजु॰ 36।24।।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।। 20 ।। यजु॰ 34।1।।

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।21 ।। यजु॰ 34।2।।

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।22 ।। यजु॰ 34।3।।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।23 ।। यजु॰ 34।4।।

यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चित ँ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।24 ।। यजु॰ 34।5 ।।

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।25 ।। यजु॰ 34।6।।

स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते। शँ राजन्नोषधीभ्यः ।।26 ।। साम॰ उ॰ 1।1।1।।

अभयं न करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ।।27 ।। अथर्व॰ 19।15।5।।

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रंभवन्तु ।।28 ।। अथर्व॰ 19।15।6।।

।।इति शान्तिकरणम् ।।

●●●●

## अग्न्याधान

तत्पश्चात् वेदी में समिधाओं का चयन करें।पुनः-

**ओं भूर्भुवः स्वः** ।। गोभिल गृ॰प्र॰ 1 खं॰ 1 सू॰ 11 ।।

इस मन्त्र का उच्चारण कर घृत का दीपक जला कर उससे वा दियासलाई से कपूर धूप गरी या घृत से संसिक्त रूई की बत्ती आदि को प्रज्ज्वलित कर निम्नलिखित मन्त्र से यज्ञ कुण्ड में चिनी हुई समिधाओं में "आदधे" पद के उच्चारण के साथ अग्नि का आधान करें-

**ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्ना-दमन्नाद्यायादधे।।** ।। यजु॰ 3।5।।

इस मन्त्र से वेदी में अग्नि का आधान कर, उस पर छोटे-छोटे काष्ठ और कपूर धर कर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर व्यजन-पंखे आदि से अग्नि को ऐसे प्रदीप्त करें कि जिससे समिधाओं में अग्नि प्रविष्ट हो जाए।

## अग्नि समिन्धन मन्त्र

**ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।** यजु॰ 15, 54 ।।

## समिदाधान मन्त्र (4 मन्त्रों से 3 समिधायें)

जब अग्नि हवन कुण्ड की समिधाओं में प्रविष्ठ होने लगे, तब चन्दन, आम वा पलाश आदि की आठ-आठ अंगुल की तीन समिधायें घृत में डुबो कर, उनमें से एक-एक निकाल कर निम्नलिखित एक-एक मन्त्र से एक-एक समिधा को अग्नि में चढ़ावें।

**ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्ना-द्येन समेधय स्वाहा।। इदमग्नये जातवेदसे-इदन्न मम।1** ।आश्व॰ गृ॰सू॰ 1।10।12। इस मन्त्र से एक

**ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये-इदन्न मम ।।2 ।।**

इस से, और

**सु समिद्धाय शोचिषे घृतं तीब्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ।।3 ।।** इस मन्त्र से अर्थात् इन दोनो मन्त्रों से दूसरी।

ओं तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि।
बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा।
इदमग्नयेऽङ्गिरसे–इदन्न मम ।।4 ।। यजु॰ 3–1, 2, 3 ।।

इस मन्त्र से तीसरी समिधा की आहुति देवें–

## पंच घृताहुति–मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र से घृत की पांच आहुतियाँ देवें–

ओम अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसे–नान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ।।1 ।। आश्व॰ गृ॰ 1–10–12 ।।

## जलप्रोक्षण–मन्त्र

तदुपरान्त दायीं अञ्जलि में जल लेकर निम्नलिखित मन्त्रों से यथाविधि वेदी के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशा में प्रोक्षण करें।

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व ।।1 ।। इससे पूर्व,
ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ।।2 ।। इससे पश्चिम,
ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ।।3 ।। इससे उत्तर और

(गोभिलगृ॰ प्र॰ 1 खं॰ 3, सू॰ 1–3)

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ।।4 ।।

## आघारावाज्यभागाहुति-मंत्र

इसके बाद यज्ञकुण्ड के उत्तर भाग में जो एक आहुति और यज्ञकुण्ड के दक्षिण भाग में दूसरी आहुति देनी होती है उसको "आघारावाज्याहुति" कहते हैं, और जो कुण्ड के मध्य में आहुतियाँ दी जाती हैं, उनको "आज्याभागहुति" कहते हैं। सो घृतपात्र में से स्रुवा को भरकर अंगूठा, मध्यमा और अनामिका से स्रुवा को पकड़ के-

## आघारावाज्याहुति-मन्त्र

**ओम् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये-इदमग्नये-इदन्न मम। 1।**

इससे वेदी के उत्तर भाग की अग्नि में आहुति देवें-

**ओम् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय-इदन्न मम।**

इससे वेदी के दक्षिण भाग में प्रज्वलित समिधाओं पर आहुति देवें-(गो॰ गृ॰ प्र॰ 1 खं॰ 8 सू॰ 25)

## आज्यभागाहुति-मन्त्र

**ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये-इदन्न मम ।। 3 ।।**

**ओम् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय-इदन्न मम ।। 4 ।।**

इन दो मन्त्रों से वेदी के मध्य भाग में दो आहुति देवें।

## व्याहृत्याहुति-मन्त्र

पुनः इसी घृतपात्र में से प्रज्वलित समिधाओं पर निम्न मन्त्रों से व्याहृति की चार आहुतियाँ देवें-

**ओं भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये-इन्न मम ।।**

**ओं भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे-इदन्न मम ।।**

ओं स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय-इदन्न मम ।।
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम ।।

उपर्युक्त घी की चार आहुति देकर 'स्विष्टकृत' आहुति निम्न मन्त्र से एक ही दें, जो घृत वा भात की होनी चाहिये।

## स्विष्टकृत्-आहुति-मन्त्र

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिंच यद्वा न्यूनमिहाकरम्।
अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां
कामानां समर्द्धयित्रेसर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।
इदमग्नये स्विष्टकृते-इदन्न मम ।। आश्व० 1.10.22 ।।

इससे एक आहुति दें-(शतपथ कां० 14।9।4।24।पार० 1।2।10)

## प्राजापत्याहुति-मन्त्र

प्राजापत्याहुति निम्नलिखित मन्त्र को मन में बोलकर देनी चाहिये।

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये-इदन्न मम ।।

इससे एक मौन आहुति देकर।

## पवमानाहुति-मन्त्र

चार आज्याहुति निम्नलिखित मन्त्रों से घृत की देवें।

ओं भूर्भुव स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ।।1 ।। ऋ० 9।66।19।।

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ।।2 ।। ऋ9।66।20।।

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।।3 ।। ऋ9।66।3।।

ओं भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा। इदं प्रजापतये–इदन्न मम ।।4 ।। ऋ10।121।10।।

इनसे घी की चार आहुति देकर–

## अष्टाज्याहुति–मन्त्र

अष्टाज्याहुति के निम्नलिखित मन्त्रों से सर्वत्र मंगल कार्यों में ये आठ आहुतियाँ देवें–

ओं त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो बह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।
इदमग्नी–वरुणाभ्यां इदन्न मम ।।1 ।। ऋ4।1।4।।

ओं स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोति नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि

मृर्डीक सुहवो न एधि स्वाहा।
इनमग्नी-वरुणाभ्यां-इदन्न मम ।।2 ।। ऋ० 4।1।5।।

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युरा चके स्वाहा। इदं वरुणाय-इदन्न मम ।। ऋ०1।25।19।।

ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणेय बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा। इदं वरुणायं-इदन्न मम ।।4 ।। ऋ०1।24।11।।

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञिया: पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुत: स्वर्का: स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः इदन्न मम ।।5 ।। का० श्रौ० 25।1।11।।

ओम्अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्व-मयासि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजँ स्वाहा। इदमग्नये अयसे-इदन्न मम।।6 ।।

का० श्रौ० सू० 25।1।11।।

ओम् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायाऽऽदित्यायादितये च-इदन्न मम ।।7 ।। ऋ० 1.24.15।।

ओं भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञँ हिँसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा। इदं जातवेदोभ्याम्–इदन्न मम ।।8 ।।यजु॰ 5।3।।

## दैनिक प्रातःकालीन आहुति-मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रों से प्रातःकालीन आहुतियाँ देवें–

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।।1 ।। यजु॰ 3-9 ।।

ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।।2 ।। यजु॰ 3–9 ।।

ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।। 3 ।। यजु॰ 3-9 ।।

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ।।4 ।।यजु॰ 6–10 ।।

## दैनिक सायंकालीन आहुति-मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रों से सायंकालीन आहुतियाँ देवें–

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।।1 ।। यजु॰ 3-9 ।।

ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।।2 ।। यजु॰ 3–9 ।।

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।।3 ।। यजु॰ 3-9 ।।

इस मन्त्र को मन में उच्चारण करके तीसरी आहुति देवें।

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या। जुषोणो अग्निर्वेतु स्वाहा ।।4 ।। यजु॰ 3–10 ।।

## प्रात:सायं के समान-मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रों से प्रात: सायं आहुति देवें-

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।
इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम ।।1 ।।

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा।
इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम ।।2 ।।

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।
इदमादित्याय व्यानाय इदन्न-मम ।।3 ।।

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः
प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः
प्राणापानव्यानेभ्यः -इदन्न मम ।।4 ।।

## उभयकालीन समर्पण-मन्त्र

ओम् आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा
।।5 ।। तैत्ति॰आ॰ 10।15।।

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।।6 ।।

य॰ 32।14।।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।

यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा ।।7 ।। य॰ 30।3।।

**ओम् अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ।।8 ।।य॰40।16।।**

इन आठ मन्त्रों से एक-एक मन्त्र करके एक-एक आहुति, ऐसे आठ आहुति देवें-1, 2

## पूर्णाहुति-मन्त्र

पुनः निम्नलिखित मन्त्र से पूर्णाहुति करें स्रुवा को घृत से भर के।

**ओं सर्वं वै पूर्णँ स्वाहा ।।1 ।।**

इस मन्त्र से एक आहुति देवें, ऐसे ही दूसरी और तीसरी आहुति देवें।

---

1. अधिक होम करने की जहाँ तक इच्छा हो वहाँ तक स्वाहा अन्त में पढ़कर गायत्री मन्त्र से होम करें। (पंचमहायज्ञविधि)

2. और अधिक आहुति देनी हो तो इस (विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।. . .) मन्त्र और पूर्वोक्त गायत्री मन्त्र से आहुति देवें। (सत्यार्थप्रकाश)

## पितृ यज्ञ

अग्निहोत्र विधि पूर्ण करके तीसरा पितृयज्ञ करें, अर्थात् जीते हुए माता पिता आदि की यथावत् सेवा करनी 'पितृयज्ञ' कहाता है।

इस पितृयज्ञ के दो भेद हैं–एक तर्पण और दूसरा श्राद्ध। उनमें से जिस क्रिया–कलाप के द्वारा विद्वान्‌रूप देव, ऋषि और पित्तरों को सुखयुक्त करते हैं, वह तर्पण कहलाता है। उसी प्रकार जो उन लोगों की श्रद्धा और सम्मानपूर्वक सेवा करना है, उसको श्राद्ध कहते हैं। अब यह तर्पण आदि कर्म विद्यमान अर्थात् जीते हुए जो प्रत्यक्ष जीवित पितर हैं, उन्हीं में घटता है, मरे हुओं में नहीं। क्योंकि मरे हुए पितरों का तो प्रत्यक्ष होना ही असम्भव है। इसलिए उनकी सेवा–शुश्रूषा नहीं हो सकती, तथा जो उन के लिए कोई पदार्थ देना चाहें, वह भी उन को नहीं मिल सकता। इसलिए केवल जीवित पितरों को ही सुखी करने, उनकी श्रद्धा पूर्वक सेवा–शुश्रूषा करने का नाम ही तर्पण और श्राद्ध वेदों में कहा गया है।

अब इस तर्पण और श्राद्ध के द्वारा सत्कार करने योग्य तीन हैं, और वे हैं, देव, ऋषि और पितर। देव वे कहलाते हैं, जो विद्वान्, धर्मात्मा और सत्याचारी हों। यथार्थ विद्या को पढ़कर औरों को जो पढ़ाते हैं, वे ऋषि कहलाते है।

इसके अतिरिक्त जो–जो हमारे प्रपितामाही–प्रपितामह, पितामही–पितामह अर्थात् परदादी–परदादा, दादी–दादा, माता–पिता, बड़े भाई–भोजाई वा अन्य बड़े सगोत्र सम्बन्धी हैं–भले ही वे अनपढ़ और सब तरह से सामान्य भी क्यों नही हैं, और आचार्य तथा इन से भिन्न भी जो

---

1. संस्कार विधि, गृहस्थाश्रम प्रकरण।
2. विद्वाँसो हि देवा: ।।श॰प॰ 3–7–6–10।।

विद्वान् लोग हैं, जो अवस्था अनुभव वा ज्ञान में बड़े-बड़े और मान-सम्मान के योग्य हैं, वे पितर कहलाते हैं। इन सब को यथाशक्ति सुखयुक्त करके तृप्त करना तर्पण और इनकी श्रद्धापूर्वक अन्न-पान आदि से सेवा करने का नाम श्राद्ध है। अब जो लोग चाहे वे माता-पिता, पितामह, प्रपितामह आदि हों, विद्वान् धर्मात्मा सदाचारी देव जन हों वा स्वयं यथार्थ विद्या को खूब पढ़-लिख कर औरों को पढ़ाने-लिखाने में सदा लगे रहते हों, और यह सब कुछ करते-कराते हुए जो क्षीण हो गए हों, वा क्षीण होते जा रहे हों, वे पितर कहलाते हैं। इस लिये उनकी अन्न आदि से सेवा-शुश्रूषा की जाती है। अब जिस अन्नादि से उनकी सेवा की जाती है, वह 'स्वधा' कहलाता है।

अब जिन्होंने वर्षों तक हमारा लालन-पालन वा पालन-पोषण किया है, हमें विद्या-सुशिक्षा से सम्पन्न किया है, हमें समय-समय पर अपने अनुभव भरे विचारों से ऊपर उठाया और आगे बढ़ाया है, हमें अपने उपदेशों-सदुपदेशों के द्वारा जीवनोद्देश्य के प्रति सदा जागरूक रख कर वक्ता-प्रवक्ता, कुशल कार्यकर्त्ता, धनी-मानी वा ज्ञानी-ध्यानी बनाया है। हम यदि सहृदय होकर सोचेंगे तो हमें ऐसा प्रतीत होगा कि इन के हम पर अनगिनत उपकार हैं। यदि हम और आगे बढ़कर सोचेंगे कि हमें ऐसा प्रतीत होगा कि वास्तव में ये जो क्षीण हुए हैं-या जो अस्थिपिञ्जर हुए हैं-ये जो ढीले हुए हैं, यह इसलिए कि इन्होंने हमारे निर्माण में अपने को गला दिया है। यह सब सोचने पर ये हमें 'स्व' -अपने प्रतीत होने लगेंगे। और अब ये सब जब हमें हृदय से अपने प्रतीत होने लगेंगे, तब इन्हें हम 'धा' धारण करने लगेंगे। इसलिय 'स्वधा' इन पितरों के लिए कहा जाता है। दूसरा 'स्वधा' का अर्थ है सात्विक, सुपाच्य, अन्न, जो पितरों को देते

1. स्वधा पितृभ्य:। वेद।

रहने से उनका स्वास्थ्य भी ठीक रहता है और वह भीतर जाकर सत्वगुण को बढ़ाने से उनकी साधना भी ठीक चलती है। इसलिए अन्यत्र भी उनके लिए ऐसे ही पदार्थों का विधान करते हुए कहा गया है कि–

**कुर्य्यादहरहः श्राद्धं पितृभ्यः प्रीतिमावहन्।**
**पयोमूलफलैर्वाऽपि मुन्यन्नैश्चापि सर्वशः।।**

प्रतिदिन प्रीतिपूर्वक इन पितरों का श्राद्ध करना चाहिये। अर्थात् श्रद्धापूर्वक इन को दुग्ध, कन्द, मूल, फलों वा मुनियों के लिये जो उचित सादा सुपाच्य अन्न हैं, उससे उन्हें सत्कृत करना चाहिये। यह सब जो गृहस्थ करता है, वह पितृयज्ञ करके अपने ऋण से उऋण होता रहता है। अतः हर सद्गृहस्थी को यह सब बड़ी श्रद्धा, प्रेम और उत्साह से करना चाहिये।

## भूतयज्ञ–बलिवैश्वदेवयज्ञ

इस को भूतयज्ञ इसलिए कहते हैं कि यह भूतों के निमित्त किया जाता हैं। इस को बलिवैश्वदेवयज्ञ भी इसलिए कहते हैं कि इसमें सब देवों के निमित्त बलि अर्थात् पुष्टिकारक पदार्थ दिए जाते हैं।

''वैश्वदेव'' यज्ञ का अभिप्राय यह है कि मनुष्य को सम्पूर्ण विश्व में देव अंश की सदा अनुभूति होती रहे। यह यज्ञ भोजन के पूर्व भी इसलिए किया जाता है ताकि मनुष्य को सदा यह बोध होता रहे कि मैं जो अन्न खा रहा हूँ इसके निर्माण में संसार भर के सब देवों (अर्थात् सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, जल, वायु, अग्नि, विद्युत, मेघ, कृषक, गौ, बैल, क्रेता, विक्रेता, पीसने वाले, बनाने वाले, खिलाने वाले आदि आदि सब जड़–चेतन जगत् के प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष देवों ने भाग लिया है, अतः मैं उनके लिए नमः अर्थात्

इस अन्न की आहुति देता हूँ वा उनके लिए अन्न निकाल कर फिर भोजन करता हूँ।

यह वह यज्ञ है जो हमारे सम्मुख संसार के हर पदार्थ, हर प्राणी के देव अंश को उजागर कर हमें उसका यथोचित मान-सम्मान करना सिखाता है वा उसकी दीन-हीन दशा है तो उस के प्रति प्रेम, दया और सहानुभूति का अनुपम व्यवहार करना सिखाता है। जैसे इसमें अति प्रसिद्ध देवों के दान अंश की बात तो हमारी समझ में सहज ही आ जाती है, जैसे सूर्य हमें ओज देता है, तेज देता है, प्रकाश देता है, औषधि वनस्पतियों को पकाता है, चन्द्र उन ओषधि-वनस्पतियों में रस भरता है, जल हमारी पिपासा को शान्त करता है, हमें स्नानादि करा कर शुद्ध करता है, भूमि हमें नानाविध अन्न देती है, वायु हमें जीवन देती है, आदि-आदि, तो इनको शुद्ध रखना हमारा धर्म है, हमारा कर्त्तव्य है। यह यज्ञ हमें यह भी सिखाता है कि गौओं में भी देवत्व है, क्योंकि वे हमें दूध देती हैं, बछड़े देती हैं, जो हमारी कृषि आदि में काम आते हैं। अतः गौ आदि के लिए भी ग्रास रखना चाहिए, कुत्ता हमारी रक्षा करता है, वह उपकारी जीव है, अतः कुक्कुर के लिये भी ग्रास रखा जाता है, जलचर मत्स्यादि प्राणी जल में सतत शोधन का कार्य करते हुए हमारा बहुत ही उपकार करते हैं, अतः उनके लिये भी जल में आटा आदि डालते हैं।

नभचर कौआ-चील आदि धरती पर इधर-उधर सड़े-गले मरे पड़े हुए मृतकों को उदरस्थ कर पर्यावरण को शुद्ध करते रहते हैं, अतः कौए आदि के लिए ग्रास है, ऐसे ही कोढ़ी, रोगी दीन-दुःखी आदि भी अपने जीवन से हमें एक शिक्षा देते हैं कि-''हमें अपने बुरे कर्मों के परिणामस्वरूप यह अवस्था प्राप्त हुई, अतः तुम अपने जीवन में सदा सत्कर्म ही करते रहना।'' अतः उनके लिए हमारे हृदय में कृतज्ञतावश वा दयावश ये भाव

उमड़ने चाहियें कि जिस से उनकी किसी न किसी रूप में सहायता हो सकें। यहाँ तक कि इस यज्ञ में कौए आदि पक्षियों तथा चीन्टी आदि कृमियों को भी ग्रास और आटा, हल्दी आदि डाल कर उन के प्रति प्रेम दया और सहानुभूति का व्यवहार सिखा कर सब प्राणियों को सुख पहुँचाने का विधान है।

सचमुच जिस दिन सभी सद्गृहस्थ यह यज्ञ बड़ी श्रद्धा प्रेम और सहानुभूति से करने लगेंगे, उस दिन धरती का हर प्राणी सुखी हो जायेगा। फिर कोई भूखा नहीं मरेगा, प्यासा नहीं मरेगा, रोग की अवस्था में औषधि आदि के अभाव में नहीं मरेगा, सर्दी-गर्मी में पहनने-ओढ़ने के वस्त्रों के अभाव में नहीं मरेगा। सर्दी-गर्मी में पहनने-ओढ़ने के वस्त्रों के अभाव में नहीं मरेगा। क्योंकि जिस संस्कृति में कुत्ते-कौए और चीन्टी आदि तक की सुख-शान्ति का विचार किया जाता हो, वहाँ मनुष्य का तो कितना मान होगा, उस के प्रति तो कितना प्रेम, दया और सौहार्दपूर्ण व्यवहार होगा, उसकी तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। वहाँ फिर ईर्ष्या-द्वेष और घृणा कैसे रह सकेगी। सचमुच जिस गली-ग्राम-नगर वा देश-विदेश में ऐसे गृहस्थ होंगे, ऐसी नारियाँ और नर होंगे, वह गली-ग्राम-नगर वा देश-विदेश धन्य होगा।

विधिः- घृतमिश्रित भात से वा भात के अभाव में पाकशाला में सिद्ध किया हुआ अर्थात् बनाया हुआ जो भी भोजन हो, उस में से खट्टे, लवणान्न और दो दल वाले (जिनकी दालें बनती हैं) क्षार प्रधान अन्नों को छोड़ कर शेष अन्न से चूल्हें की अग्नि में निम्नलिखित दस मन्त्रों से आहुति दें।

**ओम् अग्नये स्वाहा ।।1 ।। ओं सोमाय स्वाहा ।।2 ।। ओम् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ।।3 ।।**

ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ।।4 ।।
ओं धन्वन्तरये स्वाहा ।।5 ।।
ओं कुह्वै स्वाहा ।।6।।
ओम् अनुमत्यै स्वाहा ।।7 ।।
ओं प्रजापतये स्वाहा ।।8 ।।
ओं सह द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ।।9 ।।
ओं स्विष्टकृते स्वाहा ।।10 ।।

तत्पश्चात् निम्न मन्त्रों से बलिदान करें–

ओं सानुगायेन्द्राय नमः। इससे पूर्व।
ओं सानुगाय यमाय नमः। इस से दक्षिण।
ओं सानुगाय वरुणाय नमः। इस से पश्चिम।
ओं सानुगाय सोमाय नमः। इस से उत्तर।
ओं मरुद्भ्यो नमः। इस से द्वार
ओ अद्भ्यो नमः। इस से जल।
ओं वनस्पतिभ्यों नमः। इस से मूसल और ऊखल।
ओं श्रियै नमः। इससे ईशान।
ओं भद्रकाल्यै नमः। इस से नैर्ऋत्य।
ओं ब्रह्मपतये नमः। ओं वास्तुपतये नमः। इन से मध्य।
ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ओं दिवाचरेभ्यों भूतेभ्यो नमः।।
ओं नक्तंचारिभ्यों भूतेभ्यों नमः। इन से ऊपर।
ओं सर्वात्मभूतये नमः। इस से पृष्ठ।
ओं पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। इस से दक्षिण

मनुः 3–87 91 ।।

इन मन्त्रों से एक पत्तल या थाली में यथोक्त दिशाओं में भाग धरना। यदि भाग धरने के समय कोई अतिथि आ जाय तो उसी को दे देना, नहीं तो अग्नि में धर देना।

तत्पश्चात् घृतसहित लवणान्न लेकर अर्थात्, दाल, भात, शाक, रोटी आदि लेकर छः भाग भूमि पर धरें–

**शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्।**
**वायसानां कृमीणां च शनकैर्निर्वपेद भुवि।।**

मनु॰ 3–62।।

कुत्ते, पतित, चाण्डाल, पापरोगी, काक और कृमि अर्थात् चींटी, इन छः नामों से **"(1) श्वभ्यो नमः (2) पतितेभ्यो नमः (3) श्वपद्भ्यो नमः (4) पापरोगिभ्यो नमः। (5) वायसेभ्यो नमः (6) कृमिभ्यो नमः।"** ये छः भाग पृथिवी में धरे, और वे छः भाग जिस–जिस के नाम हैं, उस–उस को देने चाहियें।

आज भी वृद्ध जनों में भोजन से पूर्व जो गौ, कुत्ते, कौवे आदि को रोटी डालना एवं चींटियों के बिलों पर आटा आदि डालना, देखा जाता है, वह सब बलिवैश्वदेव यज्ञ का ही रूप है।

## नृयज्ञ–अतिथि यज्ञ

पाँचवा "नृयज्ञ" अर्थात् अतिथि यज्ञ है।

---

1. यह प्रतीक मन्त्र स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में मनु 2–92 के आधार से लिखे हैं।
2. यदि वह–वह प्राणी न सामने आएं तो सदुपयोग हो, ऐसा विचार कर दूसरे प्राणियों को खिला दें।
3. 1–नृयज्ञोऽतिथि पूजनम।।मनु॰ 3–70।।

अतिथि यज्ञ उसे कहते हैं जिसमें अतिथियों की यथावत् सेवा-शुश्रूषा होती है। अतिथि वे कहाते हैं जिनके आने-जाने की कोई निश्चित तिथि न हो। अर्थात् अकस्मात् जो घर पर आ जाए और दूसरे वे जो पूर्ण विद्वान्, सत्योपदेशक, परोपकारी, जितेन्द्रिय, धर्मात्मा, सत्यवादी, पक्ष-पात रहित, छल-कपट रहित और नित्य भ्रमण करके विद्या तथा धर्म का प्रचार और अविद्या तथा अधर्म की निवृत्ति सदा करते रहते हैं, उनको अतिथि कहते हैं। ऐसे श्रेष्ठ मान्य अतिथि जब भी आश्रय के लिये गृहस्थ के द्वार पर जाएं, तो गृहस्थ को चाहिये कि वह उनकी श्रद्धापूर्वक अन्न-पान आदि खाद्य एवं पेय पदार्थों से सेवा-शुश्रूषा करके उन्हें तृप्त करे। पश्चात् उनसे सत्संग कर अपने ज्ञान-विज्ञान को ऐसे बढ़ावे कि जिससे जीवन का निर्माण होकर धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष की सिद्धि होवे। यही वास्तव में अतिथि यज्ञ है जो अतिथियों की पूजा और उनकी संगति से लाभ उठाना है।

इसके अतिरिक्त भी बन्धु-बान्धवों में वा परिचितों में भी जो कोई घर आयें उनका भी प्रेम पूर्वक अन्न-पान आदि से यथोचित मान-सम्मान करना वा उनकी संगति से अनुभव, स्नेह, आशीर्वाद पाना आदि भी अतिथि यज्ञ कहलाता है।

सब स्त्री-पुरुषों का यह कर्तव्य है कि वे इस प्रकार प्रतिदिन प्रेम और श्रद्धा से इन पञ्च महायज्ञों को किया करें।

## पक्षेष्टि-पाक्षिकयज्ञ-दर्शपौर्णमास यज्ञपद्धति

पक्ष-यज्ञ अर्थात् पौर्णमासी और दर्श अर्थात् अमावस्या के दिन नैत्यिक अग्निहोत्र की आहुति दिये पश्चात् दैनिक हवन करके स्थालीपाक की निम्नलिखित तीन विशेष आहुतियाँ देवें। पूर्णिमा के दिन-

**ओम् अग्नये स्वाहा ।।1 ।।**
**ओम् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ।।2 ।।**
**ओं विष्णवे स्वाहा ।।3 ।।**

इन तीन मन्त्रों से स्थालीपाक की तीन आहुति देकर-

**ओं भूरग्नये स्वाहा ।। इदमग्नये-इदन्न मम ।।1 ।।**

इत्यादि व्याहृति आहुति घृत की 4 देनी चाहियें, परन्तु इसमें इतना भेद है कि अमावस्या के दिन-

**ओम् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा** । इस द्वितीय मन्त्र के बदले

**ओम् इन्द्राग्नीम्यां स्वाहा** ।। इस द्वितीय मन्त्र को बोल के स्थालीपाक की आहुति देवें ।अर्थात् निम्नलिखित

**ओम् अग्नये स्वाहा ।।1 ।।**
**ओम् इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा ।।2 ।।**
**ओम् विष्णवे स्वाहा ।।3 ।।** इन तीन मंत्रों से स्थालीपाक की तीन आहुतियां दें।

जिन के घर में अभाग्य से नित्य हवन न होता हो तो वे पक्षेष्टि-अर्थात् पक्षयागादि में सामान्य प्रकरण अवश्य किया करें।

---

1. ओं भूरग्नये स्वाहा ।।इदमग्नये-इन्न मम ।।
ओं भुवर्वायवे स्वाहा ।।इदं वायवे-इदन्न मम ।।
ओं स्वरादित्याय स्वाहा ।।इदमादित्याय-इदन्न मम ।
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम ।
2. पक्षेष्टि-पक्षयाग-शुक्ल पक्ष एवं कृष्ण पक्ष में होने वाले पोर्णमास एवं अमावास्या याग ।

## पक्षयज्ञ पद्धति[1]

पूर्णमास एवं दर्शेष्टि, अर्थात् पूर्णमासी एवं अमावस्या के दिन होने वाले यज्ञों की पद्धति–

1–ऋत्विग्वरण (यदि इष्ट हो तो, अन्यथा स्वयं करे)

2–आचमन मन्त्र, अंगस्पर्श मन्त्र,

3–ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मन्त्र,

4–अग्न्याधान मन्त्र,

5–अग्नि समिन्धन मन्त्र,

6–समिदाधान मन्त्र,

7–पञ्च आज्याहुति मन्त्र,

8–जल प्रोक्षण मन्त्र,

9–आघारावाज्याभागाहुति मन्त्र 4

(आघारावाज्याहुति 2 मन्त्र और आज्याभागाहुति के 2)

10–प्रात:कालीन आहुति मन्त्र, सायंकालीन आहुति मन्त्र,

11–दोनों काल के समान मन्त्र,

(ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम। – आदि 8 मन्त्र)

12–पूर्णमासी की आहुतियाँ (स्थालीपाक से)

**ओम अग्नये ।।1 ।।**

**ओम् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ।।2 ।।**

**ओं विष्णावे स्वाहा ।।3 ।।**

---

1–कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष की अमावास्या और पूर्णमासी के दिन होने वाले यज्ञ पाक्षिक यज्ञ कहाते हैं, जिन के नाम क्रमश: दर्शेष्टि और पौर्णमासेष्टि भी हैं। अमावास्या को दर्श भी कहते हैं, अत: अमावास्या के दिन होने वाला यज्ञ ''दर्शयाग या दर्शेष्टि'' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

अमावास्या की आहुतियाँ (स्थाली पाक से)

ओम् अग्नये स्वाहा ।।1 ।।
ओम् इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा ।।2 ।।
ओं विष्णवे स्वाहा ।।3 ।।

13 घृत की चार व्याहृति आहुतियाँ-

ओं भूरग्नये स्वाहा।। इदमग्नये-इदन्न मम।।
ओं भुवर्वायवे स्वाहा।। इदं वायवे-इदन्न मम ।।
ओं स्वरादित्याय स्वाहा।। इदमादित्याय-इदन्न मम।।
ओं भुर्भूवः स्वरग्निवाय्वादित्येम्यः-इदन्न मम ।।1 ।।

14 - पूर्णाहूति की तीन आहुतियाँ देवें-

ओं सर्वं वै पूर्णँ स्वाहा।। इस मन्त्र से एक आहुति देवें।

ऐसे ही दूसरी और तीसरी आहुति भी देवें।

## कुछ अन्य आवश्यक कृत्यों के मन्त्र

### यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र-

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रंप्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।। 1 ।। ओं यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ।।2 ।। पार० कां० 2-2-11।।

### भोजन के समय का मन्त्र

ओ३म् अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।

**प्रप्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ।। यजु॰ 11-83 ।।**

हे अन्न के स्वामी परमेश्वर! आप हमें नीरोगकारी स्वास्थ्यवर्धक और बलकारी अन्न प्रदान करो। दीन-दुःखी और अनाथों को अन्नादि प्रदान करने वालों को अपनी महती अनुकम्पा से खूब बढ़ाओ? हमें दोपायों अर्थात् हम मनुष्यों और चौपायों अर्थात् गौ-वृषभ आदि पशुओं को अन्न बल और पराक्रम की प्राप्ति कराओ।

## भोजन समाप्ति के समय का मन्त्र

**मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य। नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ।। ऋ॰ 20-117-6 ।।**

असावधान-अजागरूक व्यक्ति व्यर्थ ही अन्न को प्राप्त करता है, मैं सच कहता हूँ कि वह अन्न उसका मारक ही है। क्योंकि वह न तो उससे न्यायकारी राजा आदियों और न ही अपने किसी सखा-मित्र आदि को उससे पुष्ट करता है-तृप्त करता है। इसलिये ऐसा जो केवल स्वयं ही खाने वाला व्यक्ति है वह तो केवल पापी ही होता है। अतः अतिथि आदि के आने पर उसको पहले खिला कर ही खाना चाहिए।

## शयन विनय (शयन कालीन मन्त्र)

**यज्जाग्रतो दुरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।**

**येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।**

यत्प्रज्ञानमुत चेतो घृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे,
मनःशिवसंकल्पमस्तु।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः
शिव-संकल्पमस्तु।।

यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता
रथनाभाविवाराः। यस्मिँश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे
मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन
इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः
शिवसंकल्पमस्तु।। यजु॰ 34।मं॰ 1-6।।

## शयन समय प्रभु से प्रार्थना

अग्ने त्वं सुजागृहि वयं सुमन्दिषीमहि।
रक्षा णो अप्रयुच्छन् प्रबुधे नः पुनस्कृधि।।

यजु॰ 4-14।।

हे प्रभो! तू अच्छी तरह जागता रहता है, इसलिए हम सुख पूर्वक निश्चिन्त होकर सोते हैं, तू प्रमाद रहित होते हुए हमारी रक्षा कर और प्रातः ही पुनः हमें प्रबुद्ध कर-पुनः हमें जगा।

## मृत्युञ्जय मंत्र

**ओं त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।**

ऋ० 7-56-12।।यजु० 3-60।।

सुगन्धि वाले, पुष्टिवर्धक, तीनों स्थूल-सूक्ष्म-कारण शरीरों के अम्बा-अम्बक-मातृ-पितृ तुल्य पालक-पोषक परमेश्वर का हम भजन करते हैं। हे प्रभो! मैं खरबूजे की तरह पककर मृत्यु के बन्धन से मुक्त होऊँ, अमृत से नहीं।

## व्रत ग्रहण मंत्र

**अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।**
**इदमहमनृतात।सत्यमुपैमि।।** यजु० 1-5।।

हे सबको आगे ले जाने वाले व्रत रक्षक प्रभो! मैं (यज्ञानुष्ठान रूप) व्रत करना चाहता हूँ, वह मैं कर सकूँ (आप की कृपा से) मेरा वह व्रत सिद्ध हो। उस व्रत से मैं अनृत अर्थात् असत्य से हटकर सत्य को प्राप्त होता हूँ।

## व्रत समाप्ति पर बोला जाने वाला मन्त्र

**अग्ने व्रतपते व्रतमचारिषं तदशकं तन्मेऽराधीदमहं य एवास्मि सोऽस्मि।।** यजु० 2-28।।

हे प्रकाशवस्रूप व्रतरक्षक प्रभो! मैंने (यज्ञानुष्ठान रूप) व्रत किया था, उसे मैं कर सका। (आप की कृपा से) वह मेरा व्रत पूर्ण हुआ। भगवन्! मैं जो हूँ वही हो जाऊँ।

मुझे असत् से सत् की ओर ले चल-

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्यातिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।।

## पावमानी वरदा वेदमाता।

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।।

अथर्व॰ 19-71-1।।

## प्रार्थना

ओ३म् शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा। शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः।।

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि।।

सत्यं वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु मामवतु वक्तारम्। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

तै॰ आ॰ 7-1।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।। तमीश्वराणां परमं महेश्वरं, तं देवताना परमं च दैवतम्। पतिं पतीनां परमं परस्तात् विदाम देवं भुवनेशमीड्यम्।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

सबका भला करो भगवान्, सब पर दया करो भगवान।
सब पर कृपा करो भगवान्, सबका सब विधि हो कल्याण।।
हे ईश सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी।
सब हों नीरोग भगवन्, धन-धान्य के भण्डारी।।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुःखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी।।

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ् शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः।। यजु॰ 36-17।।

## कुछ वैदिक प्रार्थना मन्त्र

ओं तनूपा अग्नेऽसि तन्वं में पाहि ।।1 ।।

ओम् आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे धेहि ।।2 ।।

ओं वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो में देहि ।।3 ।।

ओम् अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण ।।4 ।।

ओं मेघां में देवः सविता आदधातु ।।5 ।।

ओं मेधा में देवी सरस्वती आदधातु ।।6 ।।

ओं मेधां में अश्विनौ देवावादत्तां पुष्कर स्रजौ ।।7 ।।

ओं मयि मेधां मयि प्रजां मय्यग्निस्तेजो दधातु ।।8 ।।

ओं मयि मेधां मयि प्रजां मयीन्द्र इन्द्रियं दधातु ।।9 ।।

ओं मयि मेधां मयि प्रजां मयि सूर्यो भ्राजो दधातु ।।10 ।।

ओं यत्ते अग्ने वर्चस्तेनाहं वर्चस्वी भूयासम् ।।12 ।।

ओं यत्ते अग्ने हरस्तेनाहं हरस्वी भूयासम् ।।13 ।।

ओं तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।

ओं वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि ।।

ओं बलमसि बलं मयि धेहि।

ओम् ओजोऽस्योजो मयि धोहि ।।

ओं मन्युरसि मन्युं मयि धेहि।

ओं सहोऽसि सहा मयि धेहि ।।

## वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा-
राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां
दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू
रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां

**निकामे–निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ।। यजु॰ 22–22 ।।**

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्म तेजधारी ।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल विनाशकारी ।।
होवें दुधारू गौवें, पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही ।।
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवें ।
इच्छानुसार वर्षें पर्जन्य ताप धोवें ।।
फल–फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी ।
हो योग–क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी ।
हे जगदीश दयालु ब्रह्म ! प्रभु सुनिये विनय हमारी ।
हों ब्राह्मण उत्पन्न देश में, धर्म कर्म व्रतधारी ।।
क्षत्रिय हों रणधीर महारथी, धनुर्वेद अधिकारी ।
धेनु दूध वाली हों सुन्दर, वृषभ तुंग बलधारी ।।
हों तुरंग गति चपल अंगना, हों सुरूप गुणंवाली ।
विजयी रथी पुत्र जनपद के, रत्न तेज बलशाली ।
जब ही हम जग करें कामना, जलधर जल बरसावें ।
फलें पकें बहु सुखद वनस्पति, योम क्षेम सब पावें ।।
द्विज वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें, बल पाय चढें सब ऊपर को ।
अविरुद्ध रहें, ऋजुपन्थ गहें, परिवार कहें वसुधा भर को ।
ध्रुव धर्म धरें पर दुःख हरें, परिवार कहें वसुधा भर को ।
दिन फेर पिता वर दे सविता, हम आर्य करें जगती भर को ।।

## ऋग्वेद का अन्तिम सूक्त (संगठन सूक्त)

**सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ।।1 ।।**

हे प्रभो तुम शक्तिशाली ही बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिये धन वृष्टि को ।।1 ।।

**संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।**
**देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ।।2 ।।**

प्रेम से मिल कर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो ।।2 ।।

**समानो मन्त्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तमेषाम्।**
**समानं मंत्रमभि मंत्रये वः, समानेन वो हविषा जुहोमि ।।3 ।।**

हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हों ।।3 ।।

**समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।**
**समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।।4 ।।**

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा ।।4 ।।

## यज्ञरूप प्रभु से प्रार्थना (1)

यज्ञरूप प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिये ।।1 ।।
वेद की बोले ऋचाएं, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक सागर से तरें ।।2 ।।
अश्मेधादिक रचायें, यज्ञ पर उपकार को।
धर्म-मर्यादा चला कर, लाभ दें संसार को ।।3 ।।
नित्य श्रद्धा-भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें।

रोग–पीड़ित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें ।।4 ।।
भावना मिट जाए मन से, पाप अत्याचार की।
कामनाएं पूर्ण होवें, यज्ञ से नर नार की ।।5 ।।
लाभकारी हो हवन, हर प्राणधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों, शुभ गन्ध को धारण किये ।।6 ।।
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम पथ विस्तार हो।
''इदन्न मम''का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो ।।7 ।।
प्रेम रस से तृप्त होकर, वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणारूप करुणा आप की सब पर रहे ।।8 ।।
पूजनीय प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिए ।।9 ।।

## ईश प्रार्थना (2)

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवन्! पूरी होय ।।1 ।।
विद्या बुद्धि–तेज बल, सबके भीतर होय।
दूध–पूत धन–धान्य से, वञ्चित रहे न कोय ।।2 ।।
आप की भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर।
राग–द्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर ।।3 ।।
मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश ।।4 ।।
पाप से हमें बचाइये, करके दया दयाल।
अपनी भक्ति प्रेम से, हमको करो निहाल ।।5 ।।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार।
हृदय में धैर्य वीरता, सब को दो करतार ।।6 ।।

हाथ जोड़ विनती करूँ, सुनिये कृपानिधान।
साधु–संङ्गत सुख दीजिये, दया नम्रता दान ।।7 ।।

## धन्यवाद गीत (3)

आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद।
जिस का यश नित गाते हैं, गन्धर्व मुनि जन धन्यवाद।।
मन्दिरों में कन्दरों में, पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ–सौ बार, मुनिवर धन्यवाद।।
करते हैं जंगल में मंगल, पक्षीगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द मिल, गाते हैं स्वर भर धन्यवाद।
कूप में, तालाब में, सागर की गहरी धार में।
प्रेम–रस में तृप्त हो, करते हैं जलचर धन्यवाद।।
शादियों में, कीर्तनों में, यज्ञ और उत्सव के आदि।
मीठे स्वर से चाहिए, करें नारी–नर सब धन्यवाद।।
गान कर 'अमीचन्द', भजनानन्द ईश्वर की स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता, कान धर–धर धन्यवाद।।

## भजन नं॰ 4

मगन ईश्वर की भक्ति में, अरे मन क्यों नहीं होता।
पड़ा आलस्य में मूरख, रहेगा कब तलक सोता ।।1 ।।
जो इच्छा है तेरे कट जाएं, सारे मैल पापों के।
प्रभु के प्रेम जल से क्यों नहीं, अपने को तू धोता ।।2 ।।
विषय और भोग में फँसकर, न कर बरबाद जीवन को।
दमन कर चित्त की वृत्ति, लगा ले योग में गोता ।।3 ।।
नहीं संसार की वस्तु, कोई भी सुख की हेतु है।

वृथा इनके लिये फिर क्यों, समय अनमोल तू खोता ।।4 ।।
धर्म ही एक ऐसा है, जो होगा अन्त को साथी ।
न पत्नी काम आयेगी, न भाई, पुत्र और पोता ।।5 ।।
भटकता जा बजा नाहक, तू क्यों सुख के लिए "सालिग"
तेरे हृदय के भीतर ही, बहे आनन्द का सोता ।।6 ।।

## भजन नं॰ 5

हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन,
उसे कोई क्लेश लगा न रहा ।
जब ज्ञान की गंगा में नहाया,
तो मन में मैल जरा न रहा ।।
परमात्मा को जब आत्मा ने,
लिया देख ज्ञान की आंखों से ।
प्रकाश हुआ मन में उसके,
कोई उससे भेद छिपा न रहा ।।
पुरुषार्थ ही इस दुनिया में,
सब कामना पूरी करता है ।
मन चाहा फल उसने पाया,
जो आलसी बन के पड़ा न रहा ।।
दुःखदायी हैं, सब शत्रु हैं,
ये विषय हैं जितने दुनियाँ के ।
वही पार हुआ भवसागर से जो जाल में इन के फँसा न रहा ।।
यहाँ वेद विरूद्ध जब मत फैले,
पाषाण की पूजा जारी हुई ।
जब वेद की विद्या लुप्त हुई,

तो ज्ञान का पाँव जमा न रहा।।
यहाँ बड़े-बड़े महाराज हुये,
बलवान् हुये. विद्वान् हुये।
पर मौत के पंजे से 'केवल'
संसार में कोई बचा न रहा।।

## भज़न नं॰ 6

विश्वपति के ध्यान में जिसने लगाई हो लगन।
क्यों न हो उसको शान्ति, क्यों न हो उसका मन मगन ।।1 ।।
काम, क्रोध, लोभ, मोह शत्रु हैं सब महाबली।
इनके हनन के वास्ते, जितना हो तुझ से कर यतन ।।2 ।।
ऐसा बना स्वभाव को, चित्त की शांति से तू।
पैदा न हो ईष्या की आंच, दिल में करे नहीं जलन ।।3 ।।
मित्रता सब से मन में रख, त्याग के वैर भाव को।
छोड़ दे टेढ़ी चाल को, ठीक कर अपना तू चलन ।।4 ।।
जिससे अधिक न हो कोई, जिसने रचा है यह जगत्।
उस का रख तू आसरा, उसकी ही तू पकड़ शरण ।।5 ।।
छोड़ के राग-द्वेष को, मन में तू उसका ध्यान कर ।
तुझ पे दयाल होवेंगे, निश्चय है यह परमात्मन् ।।6 ।।
आप दया स्वरूप हैं, आप ही का है आश्रय।
कृपा दृष्टि कीजिये, मुझपे हो जब समय कठिन ।।7 ।।
मन में मेरे हो चाँदना, मोक्ष का रास्ता मिले।
मार के मन को 'केवल' इन्द्रियों को करे दमन।।8 ।।

## भजन नं॰ 7

सफल जीवन करो अपना, प्रभु का नाम ले ले कर।
तरो दुस्तर यह भव सागर, प्रभु का नाम ले ले कर।।
घटा घनघोर घिर आए, खड़ा हो काल मुँह बाए।
रहो तुम फिर भी मुस्काए, प्रभु का नाम ले ले कर।।
प्रलोभन खींचकर बरबस, कुपथ पर ले चले तुम को।
रखो संयम में मन अपना, प्रभु का नाम ले ले कर।
कठिन है साधना का पथ, मगर उत्साह मत छोड़ो।
निराशा पददलित कर दो, प्रभु का नाम ले लेकर।।
मनन से मन दमन करके, पतन से 'पाल' बच निकलो।
बढ़ो तुम साधना पथ पर, प्रभु का नाम ले ले कर।।

## भजन नं॰ 8

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान् तुम्हारे चरणों में।
यही विनय यही पल-पल छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
चाहे वैरी कुल संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बनें।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अन्धेरा हो।
पर मन न डग मग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस काम ये आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।

## भजन नं॰ 9

जिस रंग में परमेश्वर राखे, उसी रंग में रहना।
वह चाहे तो ताज पहना दे, वह चाहे तो भीख मंगवा दे।
मुख से कुछ नहीं कहता, उसी रंग में रहना।। जिस रंग. . .

वह है सकल जगत् का स्वामी, घट घट वासी अन्तर्यामी
निश दिन ध्यान में रहना, उसी रंग में रहना।। जिस रंग. . .
सुख में उस को भूल न जाना, दुःख आए तो न घबराना।
सुख दुख दोनों सहना, उसी रंग में रहना ।। जिस रंग. . .

## भजन नं॰ 10

मनुआ ओम् ओम् बोल, मनुआ ओम् ओम् बोल।
कञ्चन सा नर तन यह तूने, पाया है अनमोल।
मनुआ ओम् ओम् बोल. . .
इस कञ्चन के प्याले में तू, ओम् नाम रस घोल।
मनुआ ओम् ओम् बोल. . .
भाई बन्धु और कुटुम्ब कबीला, इनमें बहुत न डोल।
मनुआ ओम् ओम् बोल. . .
कंकर पत्थर छोड के मूरख, मोती मोती रोल।।
मनुआ ओम् ओम् बोल. . .

## भजन नं॰ 11

जिन्दगी में भूलकर न पाप कर।
हर घड़ी परमात्मा को याद कर।
भक्ति शक्ति मुक्ति मिलती मोल ना।
जितनी भी करनी है अपने आप कर ।। हर घड़ी. . . .
भूल से हो जाए गर कोई पाप तो।
बैठकर कुछ काल पश्चाताप कर।। हर घड़ी. . . .
आयेगा परमात्मा तुझको नजर।
आईना दिल का तू पहले साफ कर।। हर घड़ी. . . .
राह में काँटे बहुत मन्जिल कठिन।
हर कदम चलना सम्भल कर नाप कर।। हर घड़ी. . . .

## आर्यसमाज के नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

# वेदरत्न प्रो॰ रामप्रसाद वेदालंकार

भू॰पू॰ उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

*जीवन काल:* 7.1.1936 से 1.10.1998

*जन्म स्थान:* थाना मलाकण्ड एजेन्सी, जिला मरदान, फ्रंटीयर (वर्तमान पाकिस्तान)

*पिता का नाम :* श्री गंगाबिशन जी।

*प्रचार कार्य :* उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, जम्मू, बिहार, राजस्थान, महाराष्ट्र (मुम्बई), गुजरात, नेपाल एवं अमेरिका आदि।

*अध्यापन :* दयानन्दोपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर, गुरुकुल झज्जर (हरियाणा), गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, भू॰पू॰ प्रोफेसर वेद विभाग, भू॰पू॰ उपकुलपति, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार। डेढ़ वर्ष कुलपति पद पर कार्य किया।

*लेखन प्रकाशन :* 60 पुस्तकें एवं पत्रिकाओं में लेख [illegible] निडियो कैसेट।

*सम्मान एवं पुरस्कार:*

- आचार्य सार्वभन शास्त्री स्मृति पुरस्कार 1981 से सम्मानित [illegible] ट्रस्ट, जयपुर।
- आर्य साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में [illegible] पुरस्कृत ([illegible]) द्वारा - महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह समिति, [illegible]
- वेदरत्न मानद उपाधि, 1984 में द्वारा - विश्ववेद परिषद्।
- शान्ति पुरस्कार से सम्मानित एवं पुरस्कृत 15.3.198[illegible] [illegible] समाज [illegible] द्वारा, नई दिल्ली।
- आर्य समाज की सराहनीय सेवा के लिए स्वामी शिवमुनि [illegible] की स्मृति में सम्मानित, पुरस्कृत द्वारा - दयानन्द सुधारक ट्रस्ट, [illegible], कानपुर।
- आर्य समाज [illegible], हरिद्वार में 14.7.1996 को वेद की विशिष्ट सेवा के लिए अभिनन्दित व पुरस्कृत।
- वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित, पुरस्कृत। द्वारा - वैदिक यज्ञ समिति सोनीपत (हरियाणा)।
- निर्धन निकेतन, हरिद्वार, में 27.9.1996 को सन्त सम्मेलन एवं विद्वत्सभा में वैदिक विद्वान् के रूप में अभिनन्दित, पुरस्कृत।

**मरणोपरान्त सम्मान द्वारा**

❖ वेद-वेदांग पुरस्कार-आर्य समाज सान्ताक्रूज, मुम्बई ❖ महर्षि दयानन्द सरस्वती ट्रस्ट, टंकारा ❖ वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर ❖ मानव कल्याण केन्द्र, तपोवन, देहरादून ❖ आर्य समाज स्वरूप नगर, कानपुर ❖ व्यास आश्रम, सप्त सरोवर, हरिद्वार ❖ उपदेशक विद्यालय, यमुना नगर, हरियाणा ❖ आर्य समाज, बड़ा बाजार, पानीपत, हरियाणा।